भारत भारती
२०२१
रजत जयंती विशेषांक

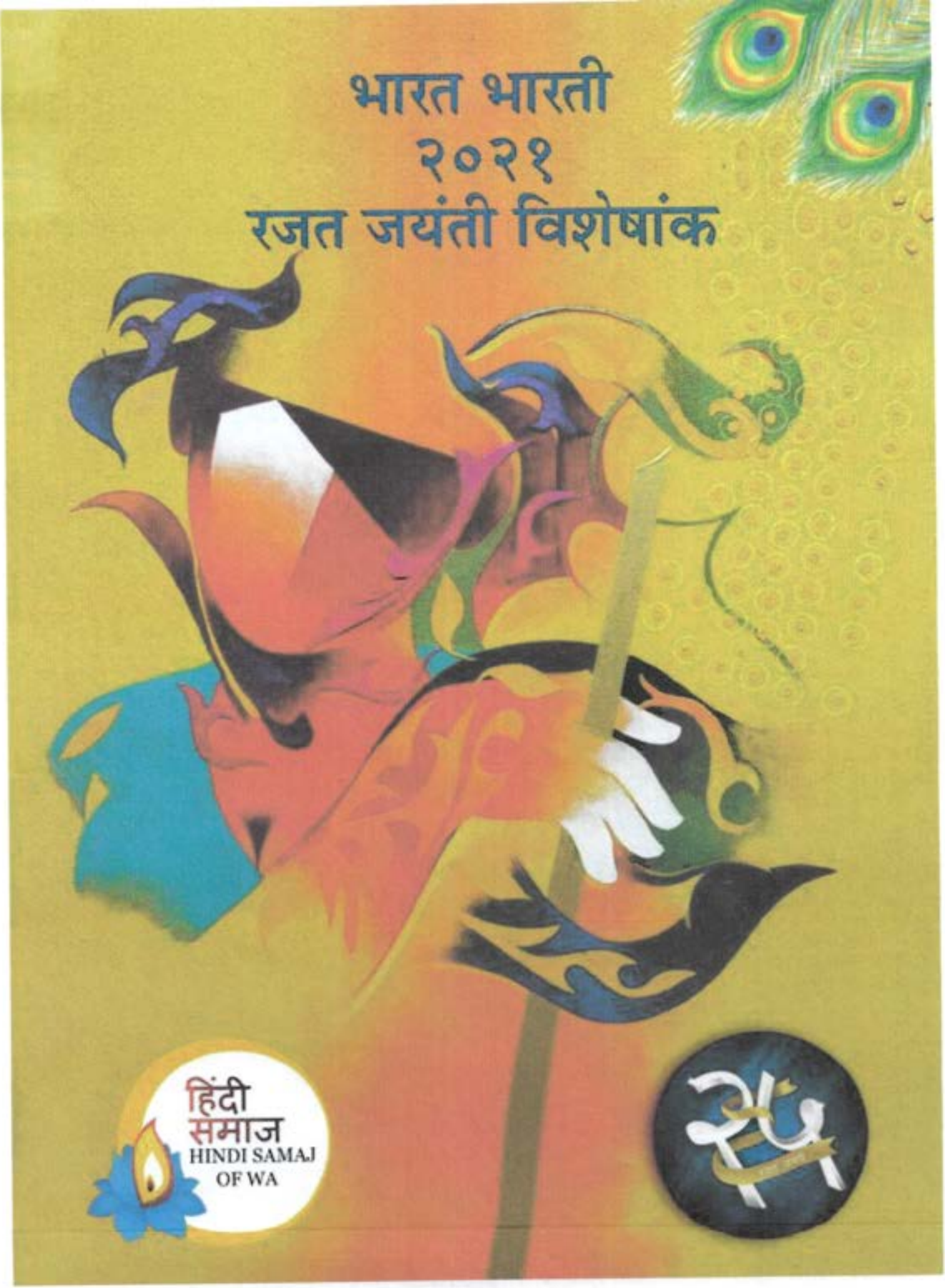

हिंदी समाज
HINDI SAMAJ
OF WA

संपादक मंडल 2021

संपादक	कुशल कुशलेंद्र
सह-संपादक	राज्यश्री मालवीय
दिग्दर्शक	प्रेम माथुर
मुख्य पृष्ठ/डिज़ाइन	अरुषा मिश्रा
तकनीकी सहयोग	राम कृष्ण बंसल
साक्षात्कार कर्त्री	संगीता बंसल

अनुक्रमाणिका

- संपादकीय 8
- अध्यक्ष की कलम से 10
- सन्देश 11
- एक साँस्कृतिक यात्रा 12
- ख्याल -ए- दिल 18
- ब्लफ नॉल के सफ़र का अनुभव 21
- गलियाँ 23
- क्या हाइड्रोजन भारत की तकदीर बदल देगी ? 24
- ए ज़िन्दगी. 27
- पूनम का चाँद 28
- डॉ. यतेन्द्र शर्मा – एक साक्षात्कार 30
- श्रद्धांजलि -सावित्री गोस्वामी. 37
- पाठशाला. 39
- एक खुश आदमी की कमीज़. 43
- श्रीमती राज्यश्री मालवीय – एक परिचय 46
- भव्य भ्रम और जीवन 49
- सिलबट्टा 55
- कब्र 56
- सकारात्मक आरक्षण 58
- प्रेम के प्रकार. 60
- भुने भुट्टे 61
- गोलू का बैट 62
- अतीत के पन्नों से 63

डॉ यतेंद्र शर्मा: एक साक्षात्कार

संगीता बंसल: *आप अपना और अपने परिवार का परिचय देने की कृपा करें।*

डॉ यतेंद्र शर्मा: संगीता जी, सर्वप्रथम मैं अपनी, अपने परिवार एवं श्री राम कथा संस्थान के समस्त माननीय सदस्यों की ओर से आपको, आपके परिवार एवं समस्त पाठकों का अभिनंदन और प्रणाम करता हूँ, और आपका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ कि आपने इस बात-चीत के लिए मुझे समय दिया। मेरा नाम यतेंद्र शर्मा है, और व्यवसाय से मैं एक वैज्ञानिक एवं धातु विज्ञान विशेषज्ञ हूँ। पिछले ४६ वर्षों से मैं खनन उद्योग में सेवा रत हूँ, जिसमें से तीन दशक मैंने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में बिताये हैं। मेरी पत्नी अवकाश प्राप्त अध्यापिका हैं। मेरे एक पुत्र हैं, जो अब ४२ वर्ष की आयु के हैं। मेरा जन्म एक श्री रामानंद सम्प्रदाय से प्रभावित सनातन धर्म को मानने वाले ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मेरे बाबा (पितामह) अपने समय के संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित एवं श्री राम के चरणों में श्रद्धा रखने वाले और उनकी गाथाओं को जन समुदाय तक पहुंचाने वाले महापुरुष एवं स्वतंत्रता संग्रामी थे। मेरा बचपन और मेरी प्राथमिक शिक्षा उन्हीं के चरणों से प्रारम्भ हुई। बाद में मेरा बड़ा सौभाग्य रहा कि पिता के घनिष्ठ मित्र आदरणीय श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी, अवकाश प्राप्त प्राचार्य नरवर संस्कृत महाविद्यालय, के चरणों में कुछ समय बिताने का अवसर मिला और इन दोनों की कृपा से मुझे संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त हुआ। बचपन से ही पारिवारिक संस्कार कह लीजिए जिससे प्रभु के चरणों में श्रद्धा रही जो घर में बहुधा साधु संतों के आगमन और उनके प्रवचन सुनकर प्रगाढ़ होती चली गई।

संगीता बंसल : *आपका पर्थ आगमन कब और किन परिस्थितियों में हुआ?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: मैं ८० के दशक के प्रारम्भ में यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी कुमासी, घाना, पश्चिमी अफ्रीका, में रसायन तकनीकी में प्राध्यापक था। वहां से मैं अध्ययनार्थ अवकाश लेकर यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी ग्राज़, ऑस्ट्रिया, में रसायन तकनीकी में पीएच.डी करने आया। विश्व के एक बड़े वैज्ञानिक, पूर्व यूनियन कार्बाइड कारपोरेशन बैटरी डिवीज़न के अध्यक्ष और उस समय के यूरोपियन स्पेस एजेंसी के अध्यक्ष विशिष्ट प्रोफेसर डॉ कार्ल कोरडेस्च के साथ वहां मैंने कार्य किया और १९८९ में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। वह पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की एक कंपनी शेरवुड ओवरसीज लिमिटेड के मंत्रणाकार थे जो बैटरी का एक उद्योग यहां लगाने पर विचार कर रहा था। मुझे उन्होंने यहां इस उद्योग का प्रमुख बना कर भेज दिया और मैं १९८९ के मध्य में इस प्रकार ऑस्ट्रेलिया आ गया। कड़ी मेहनत से हमने इस उद्योग को लगाया, परन्तु ९० के दशक की व्यापारिक मंदी के कारण हमारे मालिक ने इस उद्योग को एक चीन की कंपनी को चीन में ही लगाने को बेच दिया। उसके बाद मैंने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य प्रारम्भ कर दिया, विशेषकर मैंगनीज ओर लिथियम के क्षेत्र में। आज श्री राम की कृपा से मुझे विश्व में लिथियम प्रोसेसिंग का विशेषज्ञ माना जाता है, और मेरा सौभाग्य है कि आज कल मैं ऑस्ट्रेलिया, अमरीका और भारत की कुछ बड़ी कंपनिओं का सलाहकार हूँ।

संगीता बंसल : *आपके जीवन पर किन लोगों का प्रभाव अधिक रहा?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: धार्मिक और आध्यात्मिक विषय में मेरे बाबा (पितामह) श्री भगवान् दास जी, आचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी, भगवान स्वामी श्री रामानंद जी महाराज, माँ आनंदमयी, शिरडी साईं बाबा, स्वामी श्री राम सुख दास जी महाराज, स्वामी श्री भोला नाथ जी महाराज एवं स्वामी श्री दामोदरानन्द जी महाराज का मेरे व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव रहा।

संगीता बंसल : *संस्कृत का अध्ययन आपको कितना प्रोत्साहित करता रहा है?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: मुझे संस्कृत का प्रारम्भिक अध्ययन प्राप्त करने का बचपन में अवश्य अवसर मिला परन्तु मुझे इस बात का सदैव दुःख रहा कि व्यावसायिक अध्ययन के कारण मुझे इसमें विशेषता प्राप्त करने का अवसर कभी न मिल पाया। फिर भी मैंने यथासंभव अपने इस प्रारम्भिक ज्ञान का भरपूर लाभ उठाते हुए अपने शास्त्रों का रुचि के साथ अत्यंत अध्ययन किया। निःसंदेह, प्रारम्भिक ज्ञान ही सही, लेकिन इससे शास्त्रों को समझने में बहुत मदद मिली।

संगीता बंसल : *सनातन धर्म, जो ज्ञान और संस्कृति से भरपूर है, इसके प्रचार प्रसार को आप किस तरह प्रयत्नशील हैं?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: वैसे तो पिछले ४ दशक में जभी भी समय मिलता, हम अपने सम-वैचारिक मित्रों के साथ सत्संग करते रहते। परन्तु जनवरी २०१६ में अपने एक घनिष्ठ मित्र डॉ जुगल अगरवाला जी के साथ हमने श्री राम कथा संस्थान पर्थ की नींव डाली। हम प्रति मास श्री राम कथा का आयोजन करते थे। कुछ समय से और अब कोरोना काल के कारण हमारी गतिविधियां बंद हैं। आशा करते हैं कि २०२१ के मध्य से फिर हम अपनी धार्मिक गतिविधियां प्रारम्भ कर देंगे। श्री राम कथा के आयोजन के साथ हमारी संस्था धार्मिक पुस्तक एवं पुस्तिकाओं को लिखने एवं प्रकाशित करने का कार्य भी करती रहती है। पिछले एक दशक में अनगिनत कहानियां, कविता संग्रह एवं एक उपन्यास का लेखन एवं प्रकाशन किया है, जिसमें से कुछ हैं - कविता संग्रह: भगवान् विष्णु स्तुति (श्री विष्णुसहस्रनाम पर आधारित हिंदी काव्य), श्री रामकृष्ण परमहंस चालीसा एवं अनेक भजन; लघु कथाएं: ललिता महात्रिपुर सुंदरी, महाऋषी गौतम, प्रातः स्मरणीय पञ्च कन्याएं, सम्राट अग्रसेन, माँ कैकई का धर्म संकट, धन तेरस, सहजो बाई, श्री राम मंदिर अयोध्या – इतिहास; उपन्यास: शबरी - महान राम भक्त की कथा, आदि आदि।

संगीता बंसल : *सन २०१६ में आपने जो यह संस्था स्थापित की उसकी प्रेरणा का स्रोत क्या है?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: ऐसा मेरा कुछ अनुभव रहा है, जिसका अनुमोदन सम-वैचारिक मित्रों ने भी किया है कि पश्चिमी देशों (ऑस्ट्रेलिया भी जिनमें शामिल है) में हमने भव्य मंदिर इत्यादि का निर्माण तो अवश्य कर दिया, एक नियमित समय पर पूजा पाठ भी इन मंदिरों में अवश्य करते हैं, निःसंदेह धार्मिक उत्सवों पर इन मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ भी अधिक रहती है, लेकिन ऐसा कुछ कार्य नहीं किया जाता जिससे हमारी वर्तमान एवं युवा पीढ़ी में सनातन धर्म और

आर्य संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके। हम एक आधुनिक युग में रहते हैं। मंदिर की धार्मिक क्रियाओं, भगवान के डर के कारण कहिए अथवा पारिवारिक परम्परा के कारण, में हम भाग तो अवश्य लेते हैं, लेकिन हमें अपने महान ऋषिओं, माताएं एवं सनातन धर्म के महान सपुत्रों के त्याग, बलिदान और उनकी शिक्षाओं के ज्ञान की कमी है। हृदय से धर्म एवं नेक कर्तव्यों के प्रति श्रद्धा तभी जाग्रत होगी जब हम इन पीढ़ीओं की ज्ञान पिपासुता को शांत कर सकें, केवल धार्मिक क्रियाओं के करने से नहीं, ऐसा हमने अनुभव किया। हमने इस संस्था की संस्थापना वर्तमान एवं युवा पीढ़ी की इस ज्ञान पिपासुता को शांत करने के लिए की है। हमारा उद्देश्य धार्मिक क्रिया कलापों का बढ़ावा देने का नहीं है। वह कार्य तो मंदिर बड़े अच्छे ढंग से करते हैं।

संगीता बंसल : *संस्थान के द्वारा कितने और किस तरह के कार्यक्रम साल भर में आयोजित किए जाते हैं?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: हमने २०१७ तक तो प्रति माह श्री राम कथा का आयोजन किया। २०१८ में मेरे स्वास्थ्य के कारण एवं २०१९ में कोरोना काल के कारण हम कार्यक्रमों का आयोजन नहीं कर सके, परन्तु शीघ्र ही नव वर्ष में फिर प्रारम्भ कर देंगे। हाँ, हमने पुस्तक/ पुस्तिका लेखन एवं प्रकाशन का कार्य सलंग्न रक्खा।

संगीता बंसल : *'शबरी - महान राम भक्त की कथा', आपने जो उपन्यास प्रकाशित किया है, उस पर प्रकाश डालें?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: भगवद्भक्तों में वैसे तो अनंत महात्मा, माताएं, ऋषिवरों आदि ने इस पृथ्वी पर अवतरण लिया है, लेकिन महात्मा शबरी का एक अलग ही स्थान है। भगवान का कार्य निःस्वार्थ करते हुए उनकी भक्ति में लीन रह हमारे सामने उन्होंने साधुत्व का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मैं यह मानता हूँ कि प्रायः हमारे महान कथाकारों एवं इतिहासकारों ने अपने अपने महान ग्रंथों एवं काव्यों में नरत्व क्षेत्र को ही प्रधानता दी है। कुछ अपवादों के अतिरिक्त, जैसे महाकवि मैथली शरण गुप्त जी का 'साकेत', महाकवि अवधेश किशोर जी का 'श्रमणा' इत्यादि, कम ही ऐसे ग्रन्थ अथवा काव्य मिलते हैं जहां भारतीय नारीओं के त्याग, उनकी भगवद्भक्ति और समर्पण का सचित्र वर्णन देखने को मिलता है। कुछ महान ग्रंथों, जैसे महर्षि वाल्मीकि जी की 'रामायण', गोस्वामी तुलसी दास जी की 'श्री राम चरित मानस', श्री केशव दास जी की 'रामचंद्रिका' इत्यादि, में अवश्य ही सनातन धर्म की महान नारीओं जैसे माता अनुसुइया, माता शबरी इत्यादि का कुछ उल्लेख तो अवश्य मिलता है, परन्तु प्रधानतः इन सभी ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य लोक चरित वर्णन ही रहा है। मेरे उपन्यास 'शबरी - महान राम भक्त की कथा' का ध्येय सनातन धर्म की एक महान नारी एवं सर्वश्रेष्ठ श्री राम भक्त महात्मा शबरी की जीवन गाथा को उद्धृत करना है। एक लंबे समय के अनुसंधान के पश्चात इस कृति की रचना संभव हो सकी है। कुछ सनातन ग्रंथों का अध्ययन कर उनसे कुछ निचोड़ निकाल इस कृति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मेरी कथा के श्रोत 'श्रृंगी संहिता', 'भारद्वाज संहिता', 'यंत्र सर्वस्य', 'महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण', 'गोस्वामी तुलसीदास जी रचित श्री राम चरित मानस', 'श्री केशव दास जी रचित राम चंद्रिका' 'श्री अवधेश किशोर जी रचित श्रमणा' एवं अनगिनत लोक कथाएं हैं।

संगीता बंसल : *'श्री विष्णु स्तुतिः सहस्रनाम हिंदी काव्य ' जो कि श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् का हिंदी काव्य रूपांतरण है, कृपया इसका उद्देश्य बताएं।*

डॉ यतेंद्र शर्मा: यह काव्य 'भगवान् विष्णुसहस्त्रनाम - हिंदी काव्य' मेरे द्वारा जन कल्याण हेतु श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् को प्रचलित करने का एक प्रयास है। महर्षि भगवान् वेद व्यास जी ने मूल काव्य 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' की रचना संस्कृत श्लोकों में जन कल्याण हेतु कलियुग में आपदाओं से मुक्ति पाने का एक सुगम मार्ग के रूप में की थी। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगिनत ग्रन्थ एवं ऋषियों ने इसके महात्म्य के बारे में वर्णन किया है। संस्कृत लिपिबद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के भगवान विष्णु के सहस्त्र नामों को यथोचित रखते हुए हिंदी में भगवान के नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है तथा तरंगों द्वारा भगवान के प्रति आकर्षण बढ़ता है। यह ग्रन्थ सब के लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान से सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ इस काव्य की रचना की गई है। इस काव्यानुवाद ग्रन्थ में ३६५ चौपाइयां हैं। ऐसा मानना है कि अगर एक चौपाई का भी हृदय से प्रतिदिन गायन किया जाए, तो एक वर्ष में सम्पूर्ण काव्य ग्रंथ पढ़ा जा सकता है एवं भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

संगीता बंसल जी: *ललिता सहस्त्रनाम के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद के बारे में आपके क्या विचार हैं?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: मैंने ललिता त्रिपुर महासुंदरी के महात्मय का वर्णन करते हुए एक लघु कथा लिखी है। ललिता महात्रिपुरी के श्लोकों का अनुवाद नहीं किया। एक दिन अगर माँ ने चाहा तो अवश्य करूंगा। ललिता सहस्त्रनाम ब्रह्माण्ड-पुराण का अंश है। ब्रह्माण्ड-पुराण में इसका शीर्षक 'ललितोपाख्यान' के रूप में है। ब्रह्माण्ड पुराण के उत्तर खण्ड में भगवान हयग्रीव और महर्षि अगस्त्य के संवाद के रूप में इनका विवेचन मिलता है। ये अनेक नामों से संबोधित की जाती हैं, जैसे परमज्योति, परमधाम, परात्परा, सर्वान्तर्यामिनी, मूलविग्रहा, कल्पनारहिता, त्रयी, तत्त्वमयी, विश्वमाता, व्योमकेशी, शाश्वती, त्रिपुरा, ज्ञानमुद्रा, ज्ञानगम्या, चक्रराजनिलया, शिवा, शिवशक्त्यैक्यरूपिणी। इन्हीं नामों से छान्द्र, कठ, जाबाल, केन, ईश, देवी और भावना आदि उपनिषदों में भी संबोधित किया गया है। श्री ललिता सहस्त्रनाम का पाठ समस्त बाधाओं को दूर कर आर्थिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलता प्रदान करता है। ललिता सहस्त्रनाम में हम देवी माँ के एक हजार नाम जपते हैं। हर नाम का एक अपना महत्व होता है। यदि हम चन्दन के पेड़ को याद करते हैं तो हम उसके इत्र की स्मृति को साथ ले जाते हैं। सहस्त्रनाम में देवी के प्रत्येक नाम से देवी का कोई गुण या विशेषता बताई जाती है। मैं सब से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि नवरात्रिओं में एक दिन अवश्य माँ का पाठ करें और स्वयं ही उसका शुभ फल देखें।

संगीता बंसल : *इस धार्मिक कार्य में आपको समय कैसे मिल पता है और परिवार का कितना समर्थन प्राप्त है?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: संगीता जी, एक कहावत है, 'जहां चाह है, वहां राह है'। मैं छठे दशक के अंतिम चरण में पैर रख चुका हूँ और अभी भी १० से १२ घंटे प्रति दिन कार्य करता हूँ। मैथिली शरण गुप्त जी ने कहा है,' नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो'। मैं उनके इस मन्त्र को चरितार्थ करने का प्रयास करता रहता हूँ। पेट भरने का एवं स्वयं के परिवार को चलाने का व्यावसायिक कार्य तो सभी करते हैं। हमारे ऋषि, मुनियों, माताओं ने

हम सभी के उत्थान का मार्ग प्रदर्शन के लिए अत्यंत बलिदान देते हुए अपने अनुभवों के आधार पर कुछ मंत्रणाएँ दी हैं। अगर उन बलिदानों की महिमा बताकर उन मंत्रणाओं को समाज के प्रत्येक अंग तक पहुंचाया जा सके तो संभवतः यह जीवन कुछ सुखमय बन सके। इसी आशय के साथ मैं रात दिन इसी कार्य में लगा रहता हूँ। जानता हूँ आजकल इस आधुनिक युग में मेरे जैसे व्यक्ति को सुनने के लिए लोगों के पास समय की कमी है। लेकिन मेरा उद्देश्य तो कार्य करना है, फल की ओर देखना नहीं। मैं अपना कार्य करता रहता हूँ। अगर एक व्यक्ति को भी उस से प्रेरणा मिल सके, तो मेरा समय फलीभूत हो गया । मेरी पत्नी और पुत्र सांस्कारिक एवं अत्यंत धार्मिक प्रवर्ति के हैं। उन्हीं के प्रोत्साहन से मैं यह कार्य सम्पन्न कर पाता हूँ।

संगीता बंसल : *आप इस संस्थान के प्रचार प्रसार में आम लोगों का क्या कुछ सहयोग चाहेंगे?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: श्री राम की कृपा से यह संस्थान वित्तीय रूप से पूर्ण आत्म-निर्भर है। अगले दस वर्षों तक संस्थान के समस्त संभव व्यय के लिए संस्थापक एवं मुख्य मंत्रणाकारों ने योगदान दे रखा है। साथ में अगर कोई मध्य में अधिक आवश्यकता पड़ी तो उसके लिए भी तत्पर हैं। मेरी आपके पाठकों से बस यही कर-बद्ध विनती है कि जब भी कोई कार्यक्रम का आयोजन हो, वहां अपनी उपस्थिति से हमें कृतज्ञ करें, और कथाओं का रसास्वादन करें। अकसर हम लोग प्रसाद में भोजन की भी व्यवस्था करते हैं, तो प्रेम से कथा समापन के पश्चात प्रसाद ग्रहण करें। कथा में उपस्थित होने की अपनी रुचि आपके माध्यम से अथवा संस्थान के ईमेल से कर दें।

संगीता बंसल : *हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता क्या है तथा आप कोई विशेष संदेश देना चाहेंगे पाठकों को?*

डॉ यतेंद्र शर्मा: हिन्दू सनातन धर्म इस पृथ्वी पर संभवतः सबसे प्राचीन धर्म है जो जीवन शैली की शिक्षा देता है । हमारे सबसे पवित्र ग्रन्थ श्रीमद भगवद गीता के प्रथम अध्याय का प्रथम श्लोक ही सुख, शांति और प्रसन्नता से जीने का मार्ग दर्शित करता है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः |
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ||

साधारणतः तो इसका अनुवाद सभी लोगों ने इस प्रकार किया है, 'हे संजय, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा लिए मेरे और पांडवों के पुत्रों ने क्या किया?' लेकिन संस्कृत में हर शब्द के कई अर्थ होते हैं। यहां कुरु का अर्थ, सम्राट कुरु (जो पांडवों के एक महान पूर्वज थे) भी है, और कुरु स्वयं को भी कहते है। अतः इस 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' का अर्थ है, अपने स्वयं के स्थान को धर्म का क्षेत्र बनाओ। धर्म का यहां अर्थ कोई विशेष धर्म जैसे सनातन धर्म अथवा इस्लाम धर्म अथवा ईसाई धर्म से नहीं है। इसका अर्थ है जीवन को नेक, सदाचार, ईमानदार बनाओ। 'समवेता युत्सवः' - समवेता का अर्थ इक्षा भी है और विवेक भी। उसी प्रकार 'युयुत्सवः' का अर्थ युद्ध भी है और जीवन भी (जीवन भी तो एक युद्ध ही है जो हम प्रतिदिन लड़ते हैं)। अतः इन शब्दों का अर्थ है, जीवन को विवेक के साथ जीओ (जीवन के निर्णय इच्छा से नहीं, विवेक से लो)। 'मामकाः पाण्डवाश्चैव' में मामका का अर्थ तो मेरे, एवं पाण्डु का अर्थ महान

सम्राट पाण्डु के साथ 'दूसरी जनजाति' भी है। अतः जीवन में मेरा और दूसरा, ऐसा न करो (समभाव रखो) । 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को जाग्रत करो। 'किमकुर्वत' दो शब्दों से बना है - किम एवं कुर्वत । किम का अर्थ क्या के साथ साथ भद्र भी है। श्रीविष्णुसहस्त्रनाम में 'किम' भगवान विष्णु का एक नाम है, (जो भद्र हैं)। कुर्वत का अर्थ कार्य। अतः भद्र कार्य करो। अगर जीवन में सनातन धर्म के इन चार स्तम्भों का पालन किया जाए, तो जीवन कितना सुखमय, प्रसन्न और शांति पूर्वक बन जाये। यही मेरा सन्देश अपने सभी भाई बहनों को है ।

संगीता बंसल : *सुना है आपकी अगली रचना "श्रीमद भगवद गीता - एक भक्त के दृष्टिकोण से" है। उस के बारे में कुछ प्रकाश डालें।*

डॉ यतेंद्र शर्मा: श्रीमद भगवद् गीता की अधिकांश टीकाकारों ने एक दार्शनिक पुस्तक के रूप में प्रस्तुति की है। श्रीमद भगवद गीता एक अत्यंत भक्तिपूर्ण ग्रन्थ भी है, जिसको साधारण पुरुष बिना श्लोकों के गूढ़ अर्थ को समझे अपना जीवन सफल बना सकता है। उदाहरण के तौर पर प्रथम अध्याय मुख्यतः पांडवों और कौरवों द्वारा युद्ध की व्यूह रचना और योद्धाओं का एकत्रित होना है। इन सब योद्धाओं का आपस में पूर्व जन्म में कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य था, जिसके कारण वह यहां एकत्रित हुए। यह अध्याय पूर्व जन्म की स्मृति दिलाते हुए हमें सन्देश देता है कि हमें अपने कर्मों पर नियंत्रण लगाना चाहिए। कर्मों पर नियंत्रण विवेक के साथ साथ भगवद-स्तुति से होता है, ऐसा एक भक्त का दृष्टिकोण है। इसी प्रकार सभी अध्यायों का पृथक पृथक भक्ति दृष्टिकोण है। मेरा उद्देश्य इस दृष्टिकोण को प्रकाश में लाना है। माननीय सदस्यों के अनुरोध पर मैं इस समय इस के अंग्रेज़ी संस्करण पर कार्य कर रहा हूँ। इस के बाद मैं इसके हिंदी संस्करण पर भी कार्य करूंगा। बड़ा ही कठिन कार्य है। श्रीमद भगवद गीता में १८ अध्याय और ७०० श्लोक हैं। समय अवश्य लगेगा। भगवान की कृपा रही तो आशा है २०२१ के अंत तक मैं इस कार्य को पूर्ण कर पाऊँ।

माननीय संगीता जी, आपके समय के लिए कृतज्ञ होते हुए, एक बार फिर आप के पाठकों को शुभ कामनाएं देते हुए तथा भगवान से आपके सब के लिए कल्याण की प्रार्थना करते हुए मैं आप से अभी के लिए विदा लेता हूँ।

यतेंद्र शर्मा
अध्यक्ष, श्री राम कथा संस्थान पर्थ
Email: yatendra@optusnet.com.au Website: https://shriramkatha.org